समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

चित्रकला विषय में पी–एच.डी. उपाधि

हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. ईश्वर चन्द गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

चित्रकला विभाग

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोधार्थी

राकेश कुमार

धर्म समाज महाविद्यालय

अलीगढ़

शोध केन्द्र :

धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

2017-18

समकालीन कला में लोक तत्त्वों का निरूपण

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

चित्रकला विषय में पी–एच.डी. उपाधि
हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोधार्थी

राकेश कुमार

शोध निर्देशक

डॉ. ईश्वर चन्द गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

अध्ययन केन्द्र : धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

2017-18

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि राकेश कुमार ने चित्रकला विषय में **''समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण''** शीर्षक पर अपनी शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा को निश्चित समयावधि में पूर्ण करते हुए डा0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा की पी–एच0डी0 (चित्रकला) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है। यह मेरा मौलिक शोध कार्य है।

दिनांक :
स्थान :

(राकेश कुमार)
शोधार्थी

यह प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त शोध कार्य की रूपरेखा शोधार्थी द्वारा किया गया मौलिक कार्य है जो मेरे निर्देशन में हुआ है।

शोध निर्देशक

दिनांक :
स्थान :

(डॉ0 ईश्वर चन्द गुप्ता)
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

(डॉ. हेमप्रकाश)
प्राचार्य
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

अनुक्रमणिका

1.	प्रस्तावना	4–9
2.	समीक्षा	10–18
3.	शोध के उद्देश्य	19
4.	परिकल्पना	19
5.	कार्य प्रणाली	20
6.	प्रस्तावित कार्य का प्रभाव एवं महत्त्व	20
7.	विषयानुक्रमणिका	21–22
8.	संदर्भ / संदर्भ ग्रन्थ सूची	23–28

समकालीन कला में लोक तत्त्वों का निरूपण

प्रस्तावना

जो भी व्यक्ति समय की चेतना को आत्म सात करता है। उसे समकालीन कहा जाता है। जब चित्रकार देश काल की सीमाओं को लांघकर मनुष्य एवं प्रकृति का वह रूप देख पाने में सक्षम होता है। जो चिरंतन–सा है। जो कृति कालजयी बन जाती है और किसी न किसी रूप में सदैव एवं सर्वत्र जान पड़ती है। ऐसी कृति का लक्ष्य एवं संदेश सर्व ग्राहा बनने में सक्षम हो पाता है। तो वह समकालीन होता है। चित्रकला के क्षेत्र में एक साथ एक समय में रचना करने वालों को **''समकालीन शब्द''** से सम्बोधित करते हैं। यह प्रवृत्ति वास्तव में तत्कालीन घटनाओं परिवर्तनों के आधार पर उभरकर आती है। समकालीन होने का मतलब उसके अतः विरोधों को प्रस्तुत करना मात्र नहीं है। साथ ही साथ उसमें भविष्य को उज्जवल बनाने वाले नमूने भी निहित है। जो उसे सचमुच समकालीन बनाता है। वास्तव में आज भी परिस्थितियों के सामने खड़े होकर मुठभेड़ करना ही समकालीन है। इसीलिए अतीत की गोद से यात्रा करते हुये भविष्य की ओर संकेत करें वही समकालीन कहा जाता है।[1]

समकालीन शब्द 'सम' उपसर्ग तथा कालीन विशेषण के योग्य से बना है। सम उपसर्ग का प्रायः एक ही अथवा एक साथ के अर्थ में होता है। कालीन शब्द का अर्थ काल अथवा समय में समकालीन का सामान्य अर्थ एक ही समय में होने या रहने वाले से हैं। प्रामाणिक हिन्दी कोश के अनुसार समकालीन शब्द का अर्थ एक ही समय में होने वाला या वर्तमान कालिक आदि है। हिन्दी कोश में समकालीन शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है। जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हो एक ही समय में रहने वाला 'नालन्दा विशाल शब्द सागर' के अनुसार समकालीन शब्द का अर्थ है, जो एक ही समय में हुआ हो।[2]

आधुनिकता वैसे तो प्रत्येक युग अपने पूर्व से किसी किसी अर्थ में आधुनिक होता है। क्योंकि आधुनिकता गत्यात्मक होती है, धार्मिक सामाजिक व राजनीतिक व आर्थिक परिवर्तन तथा इन सबसे मूल में निहित नये–नये अनवेषणों ने विश्व को हमेशा नयी गति नयी चेतना व नये अर्थ दिये हैं। समय पर हमेशा से आधुनिकता की परते चढ़ती आयी है। आधुनिकता वास्तव में संदर्भहिन नहीं होती वह अतीत को सार्थक रूप में भविष्य के साथ सम्बद्ध करती है।[3]

लोक कला एक ऐसी परम्परागत कला के रूप में स्थित है। जिसकी जड़े हमारी संस्कृति के साथ आरम्भ से जुड़ी है। जिसे धर्म परम्परा तीज–त्यौहार आदि के माध्यम से इसके विभिन्न स्वरूप समय–समय पर आते रहते है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ ऐसे अंकन प्रत्येक उपक्रम के साथ किये जाते हैं। जिसके पीछे एक धार्मिक भावना जुड़ी होती है। भारतीय जीवन में धर्म की प्रधानता है। उसमें केवल भावना का ही अंकन है। इसके लिए किसी विशेष दक्षता की आवश्यकता नहीं होती प्राचीन काल में इस प्रकार की कला लोक समाज में ही समिति थी।

लोककला आदि काल से लोक जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसका सदा से सामूहिक सृजन होता रहा है। लेकिन विगत वर्षो में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप लोक जीवन में मध्य पृथकता उत्पन्न होने लगी है। मनुष्य द्वारा किये जाने वाले सभी क्रियाऐं जिनमें सौन्दर्य अनुभूति और लोक मंगल की भावना है, वो कला की श्रेणी में आते हैं। इस जगत की सृष्टि की रचना ईश्वर की सर्वोत्तम कलाकृति है। एक तरह से कहे तो हर मनुष्य कलाकार होता है। उसके अंतर्मन में कला का रूप सुप्तावस्था में निवास करता हो अवसर मिलते ही वह कला उसके भीतर से उत्स्फूर्त रूप से बाहर आती है और आकार लेती है।

लोक जीवन में कला का जो स्वरूप होता है। उसमें मात्र सौन्दर्यानुभूति नहीं होती वरन उसका सम्बन्ध जन जीवन और विश्वासों से होता है। इस प्रकार की कला का कोई भी रूप मनोरंजक और साजो सज्जा के लिए नहीं निर्मित किया जाता, वरन वह उन

सभी लोकानुष्ठानों का अंग होता है। जिसमें जादू, टोना, तंत्र, मंत्र धर्म का आश्चर्यजनक मिश्रण होता है।

लोक शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है, यह शब्द संस्कृति के 'लोक दर्शनें' धातु से बना है। इसमें 'धञ' प्रत्यय लगने से 'लोक' शब्द निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ है, देखना, इसका लट्लकार में अन्य पुरूष के एक वचन का रूप 'लोकते' होता है। अतः लोक शब्द का मूल अर्थ देखने वाला इस प्रकार लोक शब्द का अभिप्राय उस सम्पूर्ण जन समुदाय से है। जो किसी देश में निवास करता है। उसे लोक कहा जा सकता है। वास्तव में लोक शब्द से सामान्य से अतिसामान्य जन और उसका परिवेश ध्वनित होता है।

लोक शब्द की व्याख्या पाश्चात्य विद्वानों ने भी की है। हिन्दी का लोक शब्द अंग्रेजी को फोक (Folk) का हिन्दी रूपांतर है। Folk शब्द एंग्लोसेक्सन (Folc) शब्द से विकसित है। जर्मन भाषा में यह (Volk) रूप में प्रचलित है।[4]

भारतीय संदर्भ में अधिकांश लोक कलाऐं जीवन के विविध संस्कारों तिथि त्यौहारों आदि से जुड़ी हुई हैं इस अवसरों पर जमीन में अथवा दीवारों पर मंगलिक प्रतीक चित्रित किऐ जाते है। जिसके लिए पिसा हुआ चावल, गेहूँ का आटा, सूखे रंग रोली हल्दी, आदि से काम चल जाता है। उपनयन एवं विवाह संस्कारों के समय स्त्रियाँ इस सामाग्री से फूल पत्तियाँ लताऐं आदि दीवारों पर अंकित करती है। शंख, आम्रपत्र, कलश, सूर्य, चन्द्र, स्वस्तिक, मछली, हाथी आदि के मांगलिक प्रतीक इस अवसरों पर उकेरे जाते हैं।

लोककला मानवीय भावनाओं के साथ चली आ रही हैं। जो अति प्राचीन है। अपने जीवन को प्रचलित मान्यताओं और विश्वासों के अनुसार सुख एवं शान्तिमय बनाने हेतु पारलौकिक भक्तियों से आशीर्वाद प्राप्ति के लिए किया जाता है।

भारत की भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ अन्य देशों से भिन्न है। इसी कारण भारतीय संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न है। जहां भारतीय संस्कृति, धर्म, आत्मा, आध्यात्म साहित्य को समाहित किऐ हैं। वहीं पर ललित

कलाओं में विद्यमान तत्व इसे विशिष्टता प्रदान करती है। पुराणों में 64 कलाऐं मानी गयी हे। अनेक ललित कलाओं का भी व्याख्यान है। इसमें चित्रकला का भी अपना विशेष स्थान है। यह चित्रकला अपने में अलग शैलियों को समाहित किऐ हैं। जिसमें पृथक–पृथक प्रान्तों की लोक कला शैलियों के दर्शन होते हैं। इन लोककला शैलियों में रंगोली बनाने की परम्परा भी प्रचलित है।[5]

भारतीय संस्कृति में तीज–त्यौहारों के पावन अवसरों पर लोककला परम्परा प्रचलित है। इन लोककला में चित्रकला की भारतीय परम्परा की अमित छाप है। यही कारण है कि हर अचंल की कला शैली इनके डिजाइनों में देखी जा सकती है। पौराणिक काल में रंगों की कलाकृतिया बनाकर स्वागत करने की परम्परा के संकेत प्राप्त होते हैं।

जैसे मानव सभ्यता का विकास हो गया लोक कलाऐं भी विकसित होती गयी ये विकसित आकृतियां यद्यपि प्रतिकात्मक होती है। फिर भी इसमें अत्यधिक अलंकारिक्ता आ गयी है। परन्तु जहॉ कहीं उसका क्रम टूट गया है, वहॉ पुनः अवसर पाकर उसी बिन्दु से फिर विकास के पथ पर चल पड़ी है।

लोक कला की आत्मा लोक तत्व होता है। समाज में विकसित प्रत्येक लोक कला में किसी न किसी मात्रा में लोक तत्व अवश्य पाया जाता है। ऐ तत्व उन आकृतियों के मूल में समाहित लोक विश्वास, लोक श्रद्धा, लोक कथा, लोकाकृति आदि रूपों में पाये जाते हैं। जन जीवन द्वारा स्वीकृत परम्परागत तत्वों को लोक तत्व कहा जाता है।

लोक कला भी एक ऐसी ही प्रवृत्ति हैं जिसमें प्राचीन काल की भांति आज भी लोक कला को समकालीन लोक कला में खड़ा पाते हैं, लोककला की उत्पत्ति जादू, टोना, धार्मिकता, अंधविश्वास से अलंकरण प्रवृत्ति से हुई। वर्तमान में लोक कला में काफी परिवर्तन देखने को मिलते है। भविष्य में ऐसे और परिवर्तन दिखाई देगें, इस प्रकार लोक कला हमारी धरोहर है और हमें पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा ना देकर भारतीय संस्कृति एक धर्म में अपने मूल्यों को खोजना है।

लोककला में प्रचलित शैलियां है जो तकनीक और चित्रण विधान रंग योजना संयोजन रेखा प्रभाव रचना विधान लोक प्रतीकों के धार्मिक अवसरों पर बनायी जाता है। जैसे मधुवनी, रंगोली, सांझी, अल्पना, मॉड़ना, चौकपूरना, सातिया, आदि लोक कलाऐं हैं। आज भी भारतीय संस्कृति को लोक को विश्व में एक अलग पहचान मिली है। चाहे बिहार की मधुवनी या बंगाल की पटुआ कला राजस्थान मॉड़ना कला भारत की प्रत्येक संस्कृतिक आचलों की अपनी विशिष्ट आदिवासी एवम लोककला भारतीय संस्कृति से गहरा सम्बन्ध इस कारण लोककलाऐं समकालीन रूप में विकसित होती चली आयी समय के साथ–साथ कुछ न कुछ जुड़ते चले गये और समकालीन कला में इन्हीं तत्वों के प्रभाव को जोड़ते हुए आधुनिक रूप से साक्षात्कार करा रहे हैं।[6]

यही हम समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण के बारे में बातें करें तो हमें आधुनिक भारतीय चित्रकला का भविष्य अंधकार पूर्ण हैं अनेकों आधुनिक चित्रकारों ने भारतीय चित्रकला के मूल रूप की ओर लौटने का पुनः प्रयास किया आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोक कलाओं की प्रेणाओं का शुभारम्भ का श्रेय यामनी राय हो जाता है। **यामिनी राय** ने भारतीय कला के बढ़ते पश्चिमी प्रभाव को अपनी कृतियों में स्थान न देकर विशेष महत्व दिया अपने अध्ययन के दौरान बंगाल के पटुओं कलाकारों की कला से प्रभावित होकर अपनी जीवन शैली लोक कला को अपना मूल आधार बनाकर एक नवीन प्रयोग किया जिस समय अनेक भारतीय पश्चिमी कलाकारों से प्रेरणा ले रहे थे। उस समय यामिनी राय ने अपने लोक कला के प्रयोगों से नवीन रूप प्रयोग किया आधुनिक कला कृति में सफल हुए यामनी राय द्वारा किऐ गये परम्परागत भारतीय कला के प्रयोगों के फलस्वरूप अनेक आधुनिक कलाकारों ने अपने चित्रों में प्रयोग किया समकालीन कला में आज अनेक कलाकार इस ओर अग्रसर है। जो समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण किया है और कर रहे हैं। जिसमें **के0जी0 सुब्रमण्यम, जे0 स्वामीनाथन, मकवूल फिदा हुसैन, सतीश गुजराल, चिन्तन उपाध्याय, मंजीत बाबा, ए0 रामचन्द्रन, देवयानी कृष्ण, वासुदेव स्माट** आदि लोक कला को जीवित रखने वाले

समस्त चित्रकारों ने अपने माध्यम में समकालीन कला में लोक तत्वों की अवश्यकता में निःसदेंह महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समकालीन चित्रकार अपने चित्रों में लोककला के क्षेत्र से लोक कलाओं के माध्यम से आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ले रही है। आज भी देश के लोक जीवन संस्कृति और लोक साहित्य में नहीं कितने वर्षों से बिखरे हुए है। ठीक इसी प्रकार जैसे पानी और बून्द सम्पूर्ण विश्व में आज लोक कला के प्रति लोगों की सोच बढ़ती जा रही है। यह इसकी समृद्धि का प्रतीक है।

मैं अपने गुरुवर के कुशल मार्ग दर्शन में कला समीक्षकों के समक्ष कला के अन्वेषण की दिशा में शोध के माध्यम से एक दृष्टि का सूत्र पात्र करना चाहता हूँ। जो अतीत और वर्तमान को समझने में सहायक हो सकें और वर्तमान तथा भावी कलाकारों को प्रेरित कर सकें इस दिशा में अपने शोध की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो इस प्रकार है।

समीक्षा

सम्बन्धित शीर्षक का सर्वेक्षण राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय

महेश चन्द्र वार्ष्णेय ''ब्रज की लोक चित्रकला शोध ग्रन्थ में साँझी लोक कला के बारे में स्पष्ट बताया है। इन्होंने अपने शोध ग्रन्थ में ब्रज में स्थित लोककला बहुमुखी पक्षों में समायी हुई है और लोक कलाओं की अधिष्ठार्थी नारी है। जो कृष्ण की आध्यात्मिक शक्ति श्री राधा जी और उनकी सखियों की भांति भगवान श्री कृष्ण को आराधना में लोक चित्रकला में प्रतीक चिन्ह आइविम्ब एवं मांगलिक रूपों का एक–एक आध्यात्मिकता के गूढ़ अर्थों का आसानी से आस्वादन किया गया है। श्री कृष्ण की जीवन में आयी हुई असंख्य गोपियां किसी न किसी रूप में यहां की लोक चित्रकला के माध्यम से सजीव हो रही है। इन चित्रकला का इतिहास श्रीकृष्ण के जीवन लीलाओं के समान प्रतीक है। इस बात को बताया गया है ।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

हेमलता अग्रवाल (2016), ''उन्मुक्त भारतीय लोक कलाओं का व्यावसायिक स्वरूप'' शीर्षक में आपने लिखा है कि वर्तमान आधुनिक युग में अन्य दृश्य कलाओं की भाँति लोक कलाओं का उन्मुक्त स्वरूप निरन्तर प्रगति कर रहा है। प्राचीन काल में लोग कलाऐं भले ही ग्रामीण नारी समाज की धाती रही है। परन्तु वर्तमान युग में शास्त्रीय एवं आधुनिक कला के विकास में सहायक हो फिर चाहे वह तैल रंगों अथवा प्राकृतिक रंगों द्वारा कैनवास पर बनाऐ गये लोक चित्र हो या आधुनिक चित्रों में बनायी गयी लोक कृतियां सभी में आधुनिक एवं प्राचीनता का संगम दर्शनीय है। चूंकि यह संक्रमण काल है। आज बढ़ते शहरी करण ने लोग कला का स्वरूप ही बदल दिया है। आज हम देखते हैं कि ऊँची –ऊँची इमारतों एवं फाइवस्टार होटल भी एन्टिक पीस या कला के नाम पर लोक कला से जुड़ी सामग्री से अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

ईश्वर चन्द गुप्ता (2016), ''समकालीन कला में लोक तत्त्व'' आपके द्वारा लोक कलाएं मानव सभ्यता के विकास का जीता जागता उदाहरण है। इसकी उत्पत्ति धार्मिक भावनाओं अन्ध विश्वासों भय निवारण प्रवृत्ति एवं जातिगत भावनाओं की रक्षा के विचार से हुई है। इसका विकास महत्व मानव जीवन में इसलिए सर्वाधिक है कि यह सामाजिक संदर्भों को जोडती है इसकी अभिव्यक्ति का आधार ही करूणा और स्नेह तथा मंगल भाव होता है ।

आज भारतीय संस्कृति में लोककला को विश्व में एक अलग पहचान मिली है। चाहे विहार की मधुवनी लोकचित्र हो या बंगाल की पटुआ कला महाराष्ट्र की बरली कला या राजस्थान की माण्डना कला के विशिष्ठ पहचान हैं आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोककलाओं की प्रेरणाओं का शुभारम्भ का श्रेय यामिनी रंजन राय का है ।

स्तुति पाण्डेय (2002), ''लोक कला शैली 'रंगोली परम्परा''' आपने लिखा है कि भारत की भौगोलिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ अन्य देशों से भिन्न हैं। इसी कारण भारतीय संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न है। जहॉ भारतीय संस्कृति धर्म आध्यात्म साहित्य को समाहित किए हैं वहीं पर ललित कलाओं में विद्यमान तत्व इसे विशिष्टता प्रदान करते हैं। पुराणों में 64 कलाएं मानी गयी है। अनेक ललित कलाओं का व्याख्यान है। इसमें चित्रकला का भी अपना विशेष स्थान है। यह चित्रकला अपने में अलग–अलग शैलियों को समाहित किए हैं। जिससे पृथक–पृथक प्रान्तों की लोक कला शैलियों के दर्शन होते हैं। इन लोक कला शैलियों में रंगोली बनाने की परम्परा भी प्रचलित है ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

नीतू वशिष्ठ (2016) ''भारतीय उद्योग एवं कला में लोक तत्वों की भूमिका'' आपने अपने शोध पत्र में लिखा है कि सृजन तो मानव के स्वभाव में आदिम युग से ही है। मगर सृजन की सैकडों ऐसी परम्पराऐं हैं जो प्रायः मृत हैं। परन्तु धरती पर मनुष्य की

सभ्यता के हजारेां वर्षों के इतिहास में कुछ परम्पराऐं आज भी जीवित हैं। इन्हीं में से एक लोक कला परम्परा है जो प्राचीन कला से लेकर आज तक वैसी चली आ रही है ।

सच्चे अर्थों में भारत के घर आगन की हर महिला एक उत्कृष्ट चित्रकार हैं एक कुशल नृतकी है एक उच्च कोटि की गायिका है । भारत की माटी में हर तीज त्यौहार में घूंघट की ओट में सुन्दर मुस्काराती नारी के हाथ जब चूड़ियों की खनक अपने आँगन में गोबर लीपते हुये सुन्दर पीली हल्दी गेरू तथा जतन से पीसे हुये चावल के घोल से चित्रकारी करती है तो क्या माँ सरस्वती का आगमन उनकी अंगुलियों में नहीं हुआ होता भारत में लोक परम्परा यहां की स्त्रियों ने ही जीवित रखी है। चाहे वह विहार राज्य की मधुवनी चित्रकला हो पंजाव की फुलकारी हो या महाराष्ट्र की वरली कला हो ।

नीता कुमार (2016), ''समकालीन कला में लोक तत्वों की प्रयोगात्मक उपादेयता'' आपने लिखा है कि भारतीय सभ्यता में जीवन धारा लोक (जनचेतना) और वेद (शास्त्र सम्मत) के बीच होकर बहती है। लोक रंग जो सदियों पुरानी परम्पराएं चित्रण तथा शिल्प में आखें खोलती है वह हमारे पर्यावरण की साक्षी है। लोक कला की इन वसीयतों को जीवित रखना और इन धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुचाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जहां हमारे तीज–त्यौहारों, धार्मिक मान्यताओं, लोक संस्कारों आदि को अभिव्यक्ति करने के लिए कला के माध्यम के रूप में स्वीकारी गयी है।

समकालीन कला में भी पूर्व में प्रयोग किये गये तत्वों को उसी तरह प्रयोग किया जा रहा है। जिससे लोक कला को मौलिकता अपने मूलाधार में वनी रहे।

आनन्द लखटकिया (2016), ''समकालीन कला में यामिनी राय के चित्रों के लोक तत्वों की प्रयोगात्मकता'' आपने लिखा है कि यामिनी राय तथा इस प्रकार के कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत किये गये चित्र जो लोककला के ढंग पर है, इन चित्रों को केवल राष्ट्रीय पैमाने पर ही नहीं अन्तराष्ट्रीय पैमाने पर भी आदर हुआ समकालीन सभ्यता जीवन की अस्त व्यस्तता, युद्ध, स्वतन्त्रता धर्म की रक्षा उद्योग आदि पर जो प्रभाव पड़ता हो उसे वह कला रूपी भाषा द्वारा व्यक्त करता है।

यामिनी राम ने अपने चित्रों में लोक तत्वों का प्रयोग कर भारतीय आधुनिक चित्रकला में एक ऐसा नया अध्याय जोड़ दिया जिसका प्रभाव आज समकालीन समाज के समकालीन सृजन के सभी क्षेत्रों का प्रभावित करता दिखता है जो वास्तव में एक बड़ा एवं महत्वपूर्ण विषय है। इस पर विस्तार से कहने पर इसकी महत्ता स्पष्ट होती है ।

पुष्पलता शर्मा (2016) ''समकालीन लोक–कला की प्रवृत्ति एवं भविष्य'' में संसार लोक कला का अर्थ साधारण रूप से संसार अथवा जन समाज में प्रचलित कला लोक कला मूलरूप से ग्रामीण कृषक संस्कारों से प्रभावित हैं लोक कला प्रवृत्ति उपयोग से सम्बन्धित है। कला से सूक्ष्मता की प्रवृत्ति का कारण वस्तुओं का दैनिक प्रयोग है। यह कला प्रायः अलंकारिक और ज्यामितीय होती है ।

लोक कला की अधिकांश कृतियां धार्मिक पवित्र भावना पर आधारित है। कला के विकास और कला सम्बन्धी शिक्षा के मध्य सन्तुलन लाने के लिए आवश्यक है। कि कलाकार जनता में रूचियों को पहचानने का प्रयास करें कलाकार कला एवं समाज के मध्य समुचित संपर्क व तादात्मय स्थापित करने का प्रयास करें निःसंदेह भारतीय कलाकार जिस उत्साह, लग्न और रूचि से आगे बढ़ा रहे हें उसमें भारतीय चित्रकला के उन्नत वर्तमान और शुभ भविष्य की सहज ही आशा की जा सकती है।

अरविन्द झा (2016) ''समकालीन कला में लोक तत्वों का समावेश'' आपने अपने शोधपत्र में लिखा है कि भारतीय संस्कृति एक भिन्न–भिन्न कला पुष्पों के गुच्छे के समान है जिससे एक मुख्य पुष्प लोक कला की भी सुगन्ध प्रस्फुटित होती है और मानवता के साथ जन्मी लोक कला का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। आज के समकालीन युग में भारत के भिन्न–भिन्न राज्यों में अनेक कलाकार हैं। जैसे राजस्थानी कलाकारों में शैल योचल, विद्यासागर उपाध्याय उदयपुर की मीना वाय आदि प्रयोगधर्मी कलाकार हैं। जिन्होंने छापांकन विद्या को लोक कला में हिस्सा बनाया ।

छत्तीसगढ़ के राजेश शर्मा भी लोक परम्पराओं व आदिवासी क्रियाकलापों एवं प्रकृति संसाधनों जैसे गोबर, चूना, स्क्रेप, मैटल व कार्बनिक पदार्थ, लकडी का उपयोग करते हैं ।

भारतीय समकालीन कला में निरंतर छोटे परिवर्तन के पश्चात भी अनेक कलाकारों के योगदान से समकालीन कला में लोक तत्वों का समावेश दृष्टिगोचर होता है।

अर्चना सक्सेना (2016), ''समकालीन कला में लोकतत्वों की उपादेयता'' आपने लिखा है कि लोक कलाओं की उत्पत्ति मूलतः धार्मिक भावनाओं अन्धविश्वासों, भयनिवासक, समाधान अलंकरण प्रवृत्ति तथा मानवीय भावनाओं के रक्षा के विचार से हुई जो मानव संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। धर्म, संयम, आचार–विचार नैतिक मूल्य, त्याग उपवास दान दया आदि का संश्लेषण इन कलाओं में दर्शनीय है।

अतः लोक कला देखी जाने वाली वह मूल भाषा है। जिससे सदैव प्रेरणा ली गयी लोक कला के संस्कार को सजाये व बनाये रखने में ही आधुनिक कला के विकास के बीज छुपे हैं।

आभा (2016), ''लोक कला .... प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति'' आपने लिखा है कि लोक कला युगों का इतिहास संजोए हुए मानव के साथ–साथ चल रही है। परम्परागत ज्ञान और अनुभव के मानवीय कल्पनाओं और स्मृतियों के ताने वाने से उसकी सृष्टि हुई है ।

भारतीय लोक कला प्रतीकात्मक रही है। अपने असंख्य अनुपम प्रतीकों के माध्यम से अपनी अलौकिकता अध्यात्मिकता तथा धार्मिकता की कहानी कहती आ रही है। प्रतीकों के रूप में लोक कथा में कुछ ऐसे संकेतों की सृष्टि हुई है। जिसे सुख समृद्धि के रूप में मांगलिक माना जाता रहा है। जैसे स्वास्तिक चिन्ह इसी प्रकार कलश दीपक, सूर्य चन्द्र, गज, शंख आदि अनेक प्रतीकों की छटा लोक कला में दिखाई देती है।

डिम्पल गुप्ता (2016), ''बाजारीकरण एवं पूंजी निवेश में लोक तत्वों के विभिन्न नवीन स्वरूपों की उपयोगिता'' आपके द्वारा लोक कला का अभ्युदय साहित्य के साथ ही माना गया है जो दैनिक संकेत तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है तथा दूसरा रूप सामाजिक रीति रिवाजों पर आधारित है। लोक कला का विकास घरों के आंगनों में ग्राम में अशिक्षित जातियों में बिना कोई प्रसिद्धि के शान्त व अवोध रूप में धार्मिक तथा सांस्कृतिक व परिवारित परम्पराओं के बिना बौद्धिक पुट के होता आ रहा है।

जैसे लीला गुदवाना (टैटू) जिसको लोग फैशन के रूप में अलग अलग चित्रों एवं अलग–अलग रंगों के साथ अपने शरीर पर करवाते हैं रंगोली विवाह एवं अनेक अवसरों एवं त्यौहारों पर अनेक प्रकार के फूल एवं रंगों से धरती को अलंकृत किया जाता है ।

वंदना शर्मा (2016), ''लोककला बाजार के निर्माण में संचार माध्यमों की भूमिका'' आपके द्वारा आज हम लोककला के इस दौर में गुजर रहे हैं जहाँ कलात्मक गतिविधियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। नवीन कलाकारों का कलात्मक कार्य सामने आ रहा है। परिवर्तित होती जीवन धारा के साथ–साथ लोक कला से भी परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान बाजारों में मीडिया की भूमिका को राष्ट्रीय या अन्तराष्ट्रीय स्थान प्राप्त हुआ है। मीडिया के द्वारा वस्तु विशेष की जानकारी हम आसानी से दर्शकों को पहुचाते हैं। कला बाजारों में प्रयुक्त सामग्री, चित्रों , पोस्टरों, वैनर, होर्डिंग दशकों या ग्राहकों तक पहुचने से पूर्व इसके लेआउट, नमूने, पम्पलेट प्लानिंग आदि में मीडिया तथा सरकार की भी कलाकारों को सहयोग प्रदान करती है ।

विजय कुमार (2016), ''समकालीन कला में लोककला की प्रयोगधर्मिता'' आपने लिखा है कि आज कला के बदलते परिवेश से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कलाकार स्वतन्त्र अभिव्यक्ति से सभ्यता रखता जा रहा है। भारतीय शास्त्रों के कला के शास्त्रीय नियमों को ताख पर रखकर कलाकार अपनी अभिव्यक्ति को स्वतन्त्र रूप दे रहा है। लोक कला से जुडे कलाकार ज्यादातर अशिक्षित रहे हैं परन्तु समकालीन कला में

आकादमिक द्वारा शिक्षा प्राप्त कर लोक जीवन से जुडे तथ्यों को आत्म सार करके अपनी अभिव्यक्ति को लोककला से प्रेरित कर रहे हैं। समकालीन कलाकार लोक कला में भी अपने अपने प्रयोग से अपनी अभिव्यंजनात्मक अभिव्यक्ति दे रहे हैं। भारत में आधुनिक चित्रकार यामनी राय की कला पर लोक कला का प्रभाव परिलक्षित होता है।

ज्योति ठाका (2016), ''वर्तमान वैश्वीकरण में भारतीय लोक कलाकारों की सम्भावनाएँ'' शीर्षक में हमारा देश पूर्णतः लोक कला की पावन भूमि है। जहाँ संस्कृति, कला, संगीत, लोककला के स्तम्भ हैं। आज वर्तमान समय का कलाकार एवं उसकी कला पूर्णरूपेण व्यक्तिवादी कला है जो लोक कलाकारों के उज्ज्वल भविष्य तथा उन्नत वर्तमान का स्वरूप है।

कला बाजार के द्वारा नवीन क्षेत्र में कलाकृतियों के मुँहमांगे दाम मिल रहे हैं, वहीं हमारी लोककला भी कहीं से अछूती ना रह गयी है। अपितु पाश्चात्य देशों को भी हमारी लोककला ने अपनी प्रतिभा के रस में भिगो दिया है। इस प्रकार आज के प्रयोगात्मक युग हमारी लोककला, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत तथा चित्रकला के वैश्वीकरण के माध्यम से लोककला ही नहीं अपितु कलाकारों का भी एक नवीन, पृथक व स्पष्ट मार्ग प्रस्तुत हो रहा है।

गीता अग्रवाल (2016), ''समकालीन लोक कला की प्रवृत्ति एवं भविष्य'' शीर्षक में समस्त भारतीय कलाओं का आधार आनन्द है। मानव ने अपने आनन्द के लिए कितने ही उपायों की रचना की है। कितने ही आविष्कारों की सृष्टि की है। इन सबमें ललित कलाएँ सर्वोपरि हैं। समसामयिक कला अपने युग के विचारों एवं नियतियों की संकल्पना का परिणाम है जो समसामयिक कलाकारों के चिन्तन से जानी जाती है। आज की व्यवसायिक दृष्टि से भारतीय लोककला अनेक देश विदेश की कला दीर्घाओं में सुसज्जित है। भारत में लोक कलाकार भारतीय लोककला की भूमि पर ऐसी स्थिति को उत्पन्न करना चाहते हैं, जहाँ मौलिकता का विकास हो।

पुष्पा धामा (2016), ''समकालीन लोक कला की प्रवृत्ति एवं भविष्य'' शीर्षक में लोक कला यानि जनसाधारण की कला। लोगों की आस्था, विश्वास, धार्मिक भावना, अन्धविश्वास एवं भय से जुड़ी कला लोककला लोक मानस से प्रेरणा एवं पोषण पाती है। ये वही रंगों, रेखाओं के माध्यम से कही कथा, गीत एवं अभिनय के माध्यम से देखने व सुनने को मिलते हैं। यह एक ऐसी परम्परा है जो पीढ़ियों से अपने मत, मान्यताओं एवं रीतिरिवाजों के बल पर अपनी निरन्तरता बनाए हुए है। वर्तमान समय में लोक कला को हानि पहुँचाने वाला सबसे बड़ा कारण लोगों के पास समय का अभाव एवं उसका औद्योगीकरण है। धीरे–धीरे फिर से कलाकारों का ध्यान हमारी लोक कला की ओर जा रहा है तथा उसके प्रति रुचि उत्पन्न हो रही है। परन्तु आवश्यकता है उसको एक नये अन्दाज में प्रस्तुत करने की।

गीता मेहरा (2016) ''समकालीन कला में लोक तत्वों की प्रयोगात्मक उपादेयता'' शीर्षक में लोककला जन साधारण या विशेष जातीय वर्ग तक सीमित नहीं है। परन्तु आज समकालीन कला में इसका क्षेत्र व्यापक हो गया है। लोक कला में आदिम आग्रह प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से उभरे हैं और इन्हीं अप्रत्यक्ष प्रयासों के अनुरूप प्रतीक और बिम्ब उत्सर्जित होते हैं। उपयोगी कलाओं के माध्यम से ही इनके लोक जीवन में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ पूर्णता तथा दक्षता आयी है। समकालीन कलाकारों में भी इसी प्रवृत्ति के लक्षण देखने को मिलते हैं। लोक–कलाकार प्रकृति की अनुकृति नहीं करते वरन् परम्परागत लोक तत्वों की उपयोगिता के आधार पर नवीन रूप देते हैं। लोक कला ने जहाँ आज जीवन को आकर्षित किया है वहीं कला व कलाकारों के मानस पटल पर भी अपने प्रभाव की अनूठी छाप छोड़ी है।

दीप्ति पाण्डे (2016) ''नवीन प्रवृत्तियों के साथ परिपक्व होती लोक कला'' शीर्षक में लोक कला के प्रति मनुष्य की रुचि मनुष्य के अस्तित्व के ही नहीं बल्कि उसके शाश्वत का द्योतक भी है। लोक कला के माध्यम से हमें अपने समाज के संस्कारों, परम्पराओं, धर्म एवम् रीति रिवाजों का सहजता के साथ अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है।

आज के वर्तमान युग में जहाँ सभी तरफ पैसा कमाने की होड़ सी मची हुई है, वहीं ललित कलायें भी इस प्रचलन से अछूती नहीं हैं। संगीत कला, मूर्ति कला, चित्रकला सभी ने इस बदलते स्वरूप में एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। यह गर्व की बात है कि ग्रामीण क्षेत्रों से अनपढ़ औरतों द्वारा बिना किसी शिक्षा साधन के सुन्दर व कलात्मक नूमने के रूप में शुरू की गयी लोक कला आज सम्पूर्ण प्रदेश व देश को गौरवान्वित कर रही है।

रीतिका गर्ग (2016) वर्तमान समय में लोककला प्रतीकों का प्रयोग शीर्षक में भारत में अनेक प्रान्त हैं और इन सभी की अपनी एक कला है। हमारे समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अनुष्ठान होते रहते हैं। जिसमें लोककला का अपना अलग महत्व है। लोककला जन सामान्य की कला है। इसका निर्माण जन साधारण के ही द्वारा अधिकांशतः उत्सवों, त्यौहारों, शादी विवाह आदि के अवसर पर घर की साज–सज्जा आदि के लिये किया जाता है। लोक कला में प्रायः प्रतीकों का उपयोग होता है जो किन्हीं लोक–कथाओं, देवी–देवताओं, किवदंतियों व मिथकों को दर्शाते हैं। इन प्रतीकों के उपयोग का लक्ष्य उन कथाओं को सरलता से व्यक्त करना है। इन प्रतीकों में अधिकांशतः चक्र, सूर्य, चन्द्रमा, स्वास्तिक, चक्राकार रेखायें, पान, आम, पीपल, सर्प, वृत्त, आयत, त्रिभुज, डमरूनुमा–त्रिभुजाकार, आयताकार, मानवाकृतियाँ आदि देखने को मिलती हैं।

शोध के उद्देश्य

समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण आयाम के विविध पहलू ललित कलाओं में सम्बन्ध लोक कला की तकनीक चित्रण विधान लोक कला में प्रचलित शैलीया लोक कला में प्रयुक्त रंग समकालीन कला में महत्व की समीक्षा इस ओर इंगित करती है। की प्राचीन लोक कला अपने परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। लोक तत्वों का समकालीन कला में क्या महत्व है। इसे स्पष्ट करते हुये इसमें कुछ नया करने का प्रयास करूँगा ताकि आने वाले शोधार्थी लाभान्वित हो सकें, इस प्रस्तुत विषय का मुख्य उद्देश्य है।

1. समकालीन कला में लोक रूपों के विविध आयाम।
2. समाकालीन कला में लोक चित्रों की तकनीक और रचना।
3. समकालीन लोक चित्रकला में प्रयुक्त होने वाले तत्व।
4. भारतीय लोक कलाकृतियों में रंगों तत्वों सामिग्रियों और संयोजन रेखा प्रभाव तथा रचना विधान का शोधार्थी पर पडने वाला प्रभाव।
5. समकालीन लोक चित्रों में कार्य करने वाले प्रमुख कलाकार।

परिकल्पना

समकालीन लोक तत्वों रूपों माध्यमों आयाम इन सभी पक्षों को लेकर कार्य हुआ जिसमें शोधार्थी ने पाया कि वर्तमान समय में समकालीन कलाकार प्राचीनतम तत्वों को लेकर आधुनिकता का समावेश कर लोक कला के विविध रूपों को प्रस्तुत कर रहे हें जो हमारे समकालीन कला एवं भारतीय कला को शिखर पर ले जाने का उन्हीं मे से मेरा एक छोटा सा प्रयास है कला में समय के साथ–साथ कुछ न कुछ नया जुडता चला जा रहा है। उन्हीं में मेरा भी छोटा सा प्रयास **समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण** से साक्षात्कार का छोटा सा प्रयास है । जिससे असीम सम्भावनाऐं उजागर होंगी जो आने वाले शोधार्थियों के लिए लाभान्वित करेगी ।

कार्य प्रणाली

शोध विषय समकालीन कला में लोक तत्वों के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम इंटरनेट का प्रयोग करूंगा अधिक से अधिक पुस्तकों शोध पत्रों–पत्रिकाएं का विश्लेषण करूंगा मेरे शोध विश्वास के लिए कुछ शोध शिक्षकों के साथ काम करूँगा एवं विभिन्न ग्रामीण अंचलों में जाकर, देख कर साक्षात्कार करने के दौरान विवरण एकत्र करके और प्रश्नावली का मूल्यांकन करूँगा इसीलिए आंकड़ों को इकट्ठा करके और इसका मूल्यांकन सभी तीन गुणात्मक भावात्मक और प्रयोगात्मक तरीकों से नियोजित करूंगा ।

विभिन्न आयामों से डाटा का विश्लेषण करने के लिए पुस्तकालयों और कला दीर्घाओं का दौरा करके मैं प्राथमिक और द्वितीयक डाटा इकट्ठा करने में समक्ष हो पाऊंगा मैं शोध पत्रों एवं शोध ग्रन्थो को लिखने में (ए.पी.ए.)तरीके का पालन करूंगा मैं अपने प्रस्तावित अनुसंधान को सफलतापूर्वक करने के लिए अधिकतम समर्थन प्राप्त करने के लिए हमारे सम्मानीय मार्ग दर्शन शिक्षक और विश्वविद्यालय के नियमों और विनियमों के साथ सहयोग करूँगा कि **समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण** का अध्ययन के ऊपर मेरा शोध कार्य कला प्रेमियों, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए महत्व और कार्यों को समझने के लिए उपयोगी होगा।

प्रस्तावित कार्य का प्रभाव एवं महत्त्व

इस शोध विषय के माध्यम से **समकालीन कला में लोक तत्वों का निरूपण** का अध्ययन विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश व समकालीन कला में लोक तत्वों का प्रयोग व लोक कला से प्रभावित कलाकारों की कृतियों को भावात्मक रूप से समझने और मेरा शोध पूर्ण होने के उपरान्त इस विषय से सम्बन्धित शोध कार्य करने वाले अन्य शोधार्थी के लिए लाभान्वित होगा।

शोधार्थी

(राकेश कुमार)
धर्म समाज महाविद्यालय
अलीगढ़।

शोध निर्देशक

(डॉ0 ईश्वर चन्द गुप्ता)
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

समकालीन कला में लोक तत्त्वों का निरूपण

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

(i) भारतीय समकालीन कला का संक्षिप्त परिचय

(ii) समकालीन कला की प्रवृत्तियाँ

अध्याय–प्रथम समकालीन लोकचित्र कला के तत्व और स्वरूप

1.1 लोक शब्द का अर्थ, परिभाषा एवं उत्पत्ति

1.2 लोक तत्वों के विभिन्न पहलू

1.3 लोक तत्व एवं स्वरूप

अध्याय–द्वितीय समकालीन लोक कलाओं में अन्तःसम्बन्ध एवं प्रचलित शैलियाँ

2.1 लोक कला एवम् ललित कलाओं में अन्तःसम्बन्ध

2.2 लोक कला में प्रमुख शैलियाँ – मधुबनी, अल्पना, साँझी, माँडना, चौक पूरना, सातिया आदि

अध्याय–तृतीय समकालीन चित्रकला में लोक कला

3.1 लोक कला का आधुनिक एवं समकालीन स्वरूप

3.2 समकालीन चित्रकला में लोक कला का योगदान

अध्याय–चतुर्थ समकालीन चित्रकला में तकनीक लोक कला के सन्दर्भ में

4.1 समकालीन लोक चित्रों की तकनीक एवं चित्रण विधान

4.2 लोक कला में प्रयुक्त तकनीक एवं वर्ण विधान – समकालीन कला के सन्दर्भ में

अध्याय–पंचम **समकालीन कला में लोक रूपों का निरूपण**

5.1 समकालीन कला में लोक रूपों का प्रतीकात्मक स्वरूप व अंकन

5.2 समकालीन कला में लोक रूपों का प्रभाव

अध्याय–षष्ठम **समकालीन कला के प्रमुख लोक कलाकारों का परिचय एवम् उनकी कृतियाँ**

यामिनी राय, एम0एफ0 हुसैन, के0जी0 सुब्रमणियम, सतीश गुजराल, के0एस0 पनिक्कर, गणेश पाईन, माधवी पारेख, लक्ष्मण पै, जयश्री वर्मन, जे0 सुल्तान अली, रामेश्वर सिंह

उपसंहार

चित्रसूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ

[1] सीना, कुरियन, समकालीन हिन्दी कविता में लोकतत्त्व (शोधग्रन्थ), हिन्दी विभाग, कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलोजी, पृष्ठ 1, 2013

[2] वही, पृष्ठ 2

[3] वही, पृष्ठ 3

[4] वही, पृष्ठ 81

[5] Jafar, S.A.. Art Family, *An International Research Journal of Art & Article*, Vol. II, p. 76, July –December, 2002

[6] Jafar, S.A.. Art Family, *An International Research Journal of Art & Article*, Vol. VII, p. 30, January – June, 2016

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शोध ग्रन्थ

[1] वार्ष्णेय, महेश चन्द्र, ब्रज लोक चित्रकला आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में **2003,** शोध ग्रन्थ ।

[2] कु0 शशी, भारतीय धरातलीय लोककला का सांस्कृतिक महत्व उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में 1 शोध ग्रन्थ, **2002**

[3] श्रीवास्तव, पूर्णिमा, मथुरा की कला की सामाजिक पृष्ठभूमि, शोध ग्रन्थ, **1992**

[4] अंजली, ब्रज मण्डल के लोक संगीत व लोक कला का अन्तः सम्बन्ध 2009–10 लघु शोध।

[5] सिंह, प्रदीप कुमार, उत्तर प्रदेश में लोक भित्ति चित्रांकन परम्परा का एक अध्ययन, शोध प्रबन्ध, **2011**

हिन्दी ग्रन्थ

[6] वाजपेयी, कृष्ण दत्त, : ब्रज का इतिहास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली **1966**

[7] मित्तल, प्रभुदयाल, : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली **1966**

[8] मित्तल प्रभुदयाल, : ब्रज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, राजकमल, दिल्ली **1979**

[9] गैरोला, वाचस्पति, : भारतीय चित्रकला मित्र प्रकाश, इलाहाबाद **1963**

[10] गुप्ता, जगदीश, : भारतीय कला के पद चिन्ह नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली **1961**

[11] मुखर्जी, राधा कमल, : भारतीय कला का विकास, सरस्वती प्रेस, वाराणसी **1964**

[12] हल्दार, असित कुमार, : भारतीय चित्रकला चन्द्रलोक प्रकाशन, इलाहाबाद **1959**

[13] मेहता, नानालाल चमन लाल, : भारतीय चित्रकला हिन्दुस्तानी ऐकेटमी, इलाहाबाद **1933**

[14] मधुकर गोपाल, : भारतीय चित्रकला साहित्य, संगम इलाहाबाद **1989**

[15] मिश्र, इन्दुवतीः प्रतिमा विज्ञान मध्य प्रदेश, हिन्दी अकादमी, भोपाल 1972

[16] उपाध्याय, कृष्ण देवः लोक साहित्य की भूमिका साहित्य भवन, इलाहाबाद 1957

[17] उपाध्याय, कृष्ण देव, : भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी 1970

[18] अग्रवाल, गिरिराज किशोर : कला समीक्षा, देव ऋषि प्रकाशन, अलीगढ़ 1970

[19] चौ0 हरिहर, सिंह : हमारे पर्व और त्यौहार, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली 1979

[20] गुप्ता, जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली 1961

[21] मित्तल, प्रभुदयाल, : ब्रज के उत्सव त्यौहार और मेले, मथुरा 1966

[22] वर्मा, विमला : उ0प्र0 की लोक कला भूमि और भित्ति अलंकरण दिल्ली 1987

[23] डा0 सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा 1949

[24] वजपेयी, कृष्ण दत्तः उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास, आगरा 1959

[25] त्रिवेदी, रामगोविन्द, : ऋग्वेद (शांकल संहिता) का हिन्दी भाषांतर इंडियन प्रेस, प्रयाग, 1959

[26] पाण्डेय इन्द्रप्रकाशः अवधी लोक गीत परम्परा, नारायण लाल, प्रयाग, 1967

[27] पल सुचितेन्द्र नाथः भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास, जयपुर 1968

[28] वर्मा, विमलाः उत्तर प्रदेश की लोक कला भूमि और अलंकरण, दिल्ली 1987

[29] सतेन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा 1949

[30] वर्मा. डा0 सुरेन्द्र 2009 प्रथम संस्करणा (भारतीय कला एवं संस्कृति का प्रतीक) मध्य प्रदेश

[31] विश्वकर्मा डा0 श्रीमती प्रीति 2009 प्रकाशन (पूर्वांचल की लोक चित्रकला वी0एच0यू0 वाराणसी।

[32] गुप्ता, नीलिमा भारतीय लोक कला दिल्ली।

[33] कोठारी गुलाब 1997 राजस्थान की ग्रामीण कलाऐं व कलाकार जयपुर।

[34] चतुर्वेदी डा0 मंजुला 2009 भारतीय लोक कला के अभिप्राय वी0एच0यू0 वाराणसी

English Books

[35] Agarwal V.S., Cataloge of Brahmancical image in Mathura Art J.U.P.H.S. **1949**.

[36] Sharma R.C. Mathura Museum Introduction Mathura **1971**

[37] Sharma R.C. Mathura Museum and Art Mathura **1976**

[38] Sharma R.C. New Insereptions from Mathura BMA No. 8 Lucknow.

[39] Smih V.A. The Jain stupa and other Antiguites of Mathura Allahabad, **1901**

[40] Srivastava V.N. The Gupta Art of Mathura, New Delhi, **1982**

शोध पत्र पत्रिकाओं जनरल

1. ललित कला समकालीन
2. मथुरा संग्रहालय की पुरातत्व पत्रिका
3. रूपलेखा
4. जनरल ऑफ द इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएन्टल आर्ट
5. जनरल ऑफ हिस्टोरिक्ल सोसाइटी ऑफ उत्तर प्रदेश
6. जनरल ऑफ द रायल एथियाटिक सोसाइटी
7. डा0 शर्मा, रमेश चन्द्र, ब्रज के इतिहास के प्रमुख स्रोत उ0प्र0 मासिक सितम्बर 1984

8. 2002 कला त्रैमासिक लोक कला विशेषांक जनवरी से मार्च 2002

9. 2001 प्रवेशांक ब्रज सलिता जनवरी से मार्च

10. कला निधि

11. कला संगम– इलाहाबाद

12. जागृति

13. तूलिका

14. तूलिकांकन

15. उत्तर प्रदेश सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

16. आकृति राजस्थान ललित कला आकादमी, जयपुर

17. सुन्दरम, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

18. कला त्रैमासिक राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश, लखनऊ

19. सास्वत– वाराणसी

20. दीर्घा–लखनऊ

21. मार्ग–मुम्बई

22. कला त्रैमासिक–लखनऊ

23. आकृति– राजस्थान

24. इण्डिया टुडे– दिल्ली

25. सौन्दर्य– मेरठ

26. समकालीन कला–दिल्ली

27. आर्ट फैमिली–अलीगढ़

28. आरटिस्ट नरेसन–अलीगढ़

29. कलावार्ता–मध्यप्रदेश

संग्रहालय और पुस्तकालय

1. मार्डन आर्ट गैलरी– नई दिल्ली
2. राष्ट्रीय संग्रहालय –नई दिल्ली
3. ललित कला भवन– –नई दिल्ली
4. पुरातत्व विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली
5. नेशनल अरकाइव नई दिल्ली
6. राज्य ललित कला ऐकडमी लखनऊ
7. भारत कला भवन, वाराणसी
8. प्रिन्स ऑफ वेल्स संग्रहालय मुम्बई
9. राजकीय संग्रहालय रामवाग जयपुर
10. राजकीय संग्रहालय, कोटा
11. सिटी पेलेस संग्रहालय, जयपुर
12. राजकीय संग्रहालय, उदयपुर
13. चंडीगढ़ संग्रहालय, पंजाब
14. भुरि सिंह पुस्तकालय, चम्वा
15. मौलाना आजाद पुस्तकालय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़
16. केन्द्रीय पुस्तकालय डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा
17. केन्द्रीय पुस्तकालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
18. बी0एच0यू0 पुस्तकालय, वाराणसी

1.	Title of the Synopsis	:	समकालीन कला में लोक तत्त्वों का निरूपण
2.	Name of Scholar	:	Rakesh Kumar
3.	Subject /Faculty	:	Drawing & Painting/ Faculty of Fine Arts
4.	Registration No.	:	352/ 2017 5738
5.	Name of Supervisor	:	Dr. Ishawar Chand Gupta
6.	Designation	:	Associate Professor Dept. of Drawing & Painting D.S. College, Aligarh
7.	Research Centre Name	:	D.S. College, Aligarh
8.	Total No. of Pages	:	30
9.	Scanned Photograph, E-mail Address, Phone, Contact, Address	:	Attached on next page.

BIO-DATA

Name : **Rakesh Kumar**

Father's Name : Mr. Ram Shankar Yadav

Date of Birth : 05.07.1988

Address : Vill. Piparpati, Musthkam, Post Prasawn, Distt. Basti

Pincode : 272301

Contact No. : 9532068380

Email ID : rakeshkumarbasti88@gmail.com

Educational Qualification :

S.No.	Name of Exam	Board / University	Year	Division / Grade	Subject
1.	High School	U.P. Board	2002	2nd	Hindi, Eng., Science, Maths, S.Social, Drawing
2.	Intermediate	U.P. Board	2004	1st	Hindi, English, Physics, Chemistry, Biology
3.	B.A.	Dr. R.M.L. Avadh Univ., Faizabad	2007	2nd	Hindi, Ancent History, Drawing & Painting
4.	M.A.	Dr. R.M.L. Avadh Univ., Faizabad	2009	1st	Drawing & Painting

Specialization : Drawing and Painting

Certified that particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date :
Place : **(Rakesh Kumar)**